بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक22.09.2017 मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

उन लोगों की मजलिसों में बैठो जिन को देखकर तुम्हें ख़ुदा याद आए और जिनकी बात चीत से तुम्हारा दीनी ज्ञान बढ़े तथा जिनका कर्म तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए

माँ बाप को भी अपने बच्चों की मजलिसों तथा सम्पर्कों पर नज़र रखनी चाहिए

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- दुनिया में मजलिसों के अनेक प्रकार हैं। सब प्रकार की मजलिसें और कमैटियाँ तथा मिलकर बैठना, दुनिया के कामों के लिए होता है। ख़ुदा के लिए अथवा ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के लिए या ख़ुदा तआला की निकटता प्राप्त करने के लिए नहीं होतीं मजलिसें। यदि लोगों में सुधार के लिए भी कोई मजलिस लगती है, बातों पर सोच विचार होता है तो वे भी सांसारिक उद्देश्य के लिए हैं। ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्ति उनमें भी उद्देश्य नहीं होता, लेकिन कुछ मजलिसें ऐसी भी होती हैं जो दीन के उद्देश्य हेतु होती हैं, इंसानों को ख़ुदा तआला के निकट लाने की योजना बनाने के विषय में होती हैं। इन मजलिसों में शामिल होने वाले अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए उनमें शामिल होते हैं। ऐसी मजलिसें हैं जो ख़ुदा तआला को पसन्द हैं तथा ऐसी मजलिसों के परणिाम इस दुनिया में भी ज़ाहिर होते हैं और ऐसी मजलिसों में शामिल होने वालों को अल्लाह तआला मरने के बाद भी प्रतिफल प्रदान करता है। अतः एक मोमिन का काम है कि चाहे उसके घर की मजलिस है अथवा उसके बाहर की, यह प्रयास रहे कि हमने अल्लाह तआला की प्रसन्नता को किस प्रकार प्राप्त करना है तथा अपनी आध्यामिकता को किस प्रकार संभालना तथा बेहतर करना है, अपनी और मोमिनों की हालत को किस प्रकार बेहतर करना है। एक मोमिन की प्रत्यक्षतः सांसारिक मजलिस भी अल्लाह तआला की याद से ख़ाली नहीं होती। दुनिया के कामों को करते हुए भी व्यर्थ की बातों से वह बचने वाला होता है।

यही एक मोमिन से आशा की जाती है कि इन बातों को वह हर समय अपने सम्मुख रखे। क़ुर्आन-ए-करीम में भी अल्लाह तआला ने मोमिनों को मजलिसों के विषय में जो हिदायत फ़रमाई है वह यही है कि रोष और बग़ावत से पाक, गुनाहों से पाक, रसूल की अवज्ञा से बचने वाली तथा तक़्वा पर चलने वाली मजलिसें होनी चाहिएँ। लेकिन खेद है कि आजकल मुसलमानों की अधिकांश मजलिसें इसके बिल्कुल विरुद्ध हैं तथा मुसलमान मुसलमान को नष्ट करने के प्रयासों में व्यस्त है तथा योजना बनाते हैं। अल्लाह तआला तो फ़रमाता है يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا تَنَاجَيۡتُمۡ فَلَا تَتَنَاجَوۡا بِالۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ وَمَعۡصِيَتِ الرَّسُوۡلِ وَتَنَاجَوۡا بِالۡبِرِّ وَالتَّقۡوٰى‌ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىۡۤ اِلَيۡهِ تُحۡشَرُوۡنَ कि ऐ लोगो जो ईमान लाए हो जब तुम आपस में गुप्त परामर्श करो तो पाप, द्वेष और रसूल की अवज्ञा पर आधारित विमर्श न किया करो, नेकी और तक़्वा के बारे में परामर्श किया करो और अल्लाह से डरो जिसके समक्ष तुम एकत्र किए जाओगे।

लेकिन जैसा कि मैंने कहा, मुसलमान अल्लाह तआला के इस निर्देश को भूल गए। आपस की फूट अपनी चरम सीमा पर है। अल्लाह तआला ने मोमिन की तो यह निशानी बताई कि رُحَمَآءُ بَيۡنَهُمۡ अर्थात आपस में मुहब्बत और स्नेह करने वाले हैं लेकिन यहाँ तो हमें यह स्थिति दिखाई देती है जो कफ़िरों वाला दृश्य अल्लाह तआला ने खींचा है जिनके बारे में फ़रमाया कि وَقُلُوۡبُهُمۡ شَتّٰى अर्थात उनके दिल फटे हुए हैं। विचार विमर्श हैं आपस में भी तथा अन्य लोगों के साथ भी, गुप्त योजनाओं की अवस्था में भी लेकिन अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करते हुए और तक़्वा से दूर, अल्लाह तआला का भय बिल्कुल नहीं रहा। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अल्लाह से डरो जिसके समक्ष तुम एकत्र किए जाओगे, वहाँ हकूमतें और बादशाहतें और धन दौलत तथा पश्चिमी देशों का आशीर्वाद काम नहीं आएगा। कोई बड़ी शक्ति वहाँ अल्लाह तआला और उसके रसूल के निर्देशों की अवहेलना और तक़्वा से दूर हटने के दंड से नहीं

बचा सकेगी। ख़ुदा तआला की ज़ात पर ईमान समाप्त हो गया है अन्यथा यदि तनिक सा भी अल्लाह तआला की ज़ात पर ईमान और विश्वास होता तो न मुसलमान राजनेताओं तथा लीडरों की यह स्थिति होती जो आज है और न ही तथाकथित उलमा की यह हालत होती जो आज हमें नज़र आती है। अतः इस ज़माने में यह हमारा भी कर्त्तव्य बनता है कि हम ऐसी समस्त सोचों से जहाँ अपने आपको को पाक करें और अल्लाह तआला के भय और तक़्वा को अपने अन्दर बढ़ाएँ वहाँ जिनकी उन लोगों तक पहुंच है, ग़ैर अहमदी मुसलमानों तक और सम्बंध हैं, वे जिस हद तक अपनी सीमा में, अपनी परिधि में मुसलमानों को समझा सकें, समझाएँ कि तुम्हारी यह हालत न केवल तुम्हें ग़ैरों की सम्पूर्ण दासता में ले जाएगी बल्कि ख़ुदा तआला की सज़ा के भी अधिकारी बनोगे तुम। जिस दुनिया के पीछे तुम पड़े हुए हो वह भी तुम्हारे हाथ से जाएगी और दीन को तो तुम पहले ही छोड़ बैठे हो। अतः अभी समय है अल्लाह तआला का भय और तक़्वा दिलों में पैदा करो अन्यथा सब कुछ हाथ से जाता रहेगा।

सांसारिक परामर्श की मजलिसों में एक मजलिस यू एन ओ की भी है। अभी पिछले दिनों ही इसका एक इजलास हुआ, अमरीका के सदर का भाषण था। पश्चिमी टीकाकार ने लिखा कि इस भाषण से अमन के बजाए फ़साद और फ़ितना पैदा होने की अधिक सम्भावना है बल्कि यह भी उन्होंने लिखा कि सम्भवतः इस भाषण से सऊदी अरब तथा कुछ मुस्लिम देश ख़ुश हुए होंगे अन्यथा अत्यंत निराशा जनक तथा जंग और उपद्रव की आग भड़काने वाला भाषण है। अतः मुस्लिम सरकारों को अल्लाह तआला के आदेशों को देखना चाहिए तथा हर प्रकार के उपद्रव और फ़साद से बचना चाहिए।

अतः साधारणतः मुस्लिम दुनिया में जो कुछ हो रहा है उसका वर्णन करते हुए मैंने बात की है लेकिन हमें अपनी हालतों का भी निरीक्षण करते रहना चाहिए। सदैव याद रखना चाहिए कि शैतान को कभी बर्दाश्त नहीं होगा कि वह जमाअत को प्रगति करता हुआ देख सके। शैतान ने अपनी प्रकृति के अनुसार हमारे अन्दर भी बेचैनी पैदा करने तथा फूट डालने का प्रयास करते रहना है। अतः वे लोग जो कई बार एकत्र होकर बैठते हैं अपने स्थानीय क्षेत्र अथवा नगर के निज़ामे जमाअत अथवा जमाअत के राष्ट्रीय निज़ाम के बारे में बात करते हैं, वे लोग शैतना के बहकावे में आ जाते हैं। शैतान का काम चूँकि शुभ चिंतक बनकर वार करना है इस लिए ऐसी मजलिसों में ऐसे लोग भी शामिल हो जाते हैं जो वास्तव में जमाअत के निज़ाम के विरुद्ध नहीं होते। इधर उधर मजलिसें लगाकर बातें करना तथा ऐसे अंदाज़ में बातें करना जैसे बड़े राज़ की बातें की जा रही हैं, बड़ी विशेष चर्चा की जा रही है तथा जमाअत का बड़ा दर्द रख कर बातें की जा रही हैं। यह बिल्कुल अनुचित तरीक़ा है तथा गुनाह, द्वेष और रसूल की अवज्ञा तथा तक़्वा से दूर की बातें हैं। अतः ऐसी मजलिसों से अल्लाह तआला ने मोमिनों को सावधान किया है कि तुम इनसे बचो। किसी ओहदेदार के विरुद्ध शिकायत है या अमीर के विरुद्ध शिकायत है तो केन्द्र को लिखा करें या ख़लीफ़-ए-वक़्त को पहुंचा दें, इसके बाद फिर जमाअत के लोगों का काम समाप्त हो जाता है अब यह ख़लीफ़-ए-वक़्त का काम है कि किस मामले को किस प्रकार देखना है तथा किस प्रकार निवारण करना है। हाँ, दुआ प्रत्येक को अवश्य करते रहना चाहिए, प्रत्येक अहमदी को दर्द के साथ दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हर प्रकार की बुराई को जमाअत में से निकाले और तक़्वा पर चलने वाले और काम करने वाले सदैव जमाअत को मिलते रहें।

इस महत्त्व पूर्ण बात को प्रत्येक को याद रखना चाहिए कि ज्यूँ जयूँ अल्लाह तआला जमाअत को प्रगति देता चला जाएगा और दे रहा है, शैतान ने भी अपना काम करना है। शैतान ने तो पहले दिन से ही अल्लाह तआला के सामने इस बात को व्यक्त कर दिया था तथा अनुमति ले ली थी कि वह मोमिनों को बहकाने का काम करेगा। जमाअत के विरोधी जहाँ खुलकर जमाअत के विरोध की योजना बनाते हैं और बनाएँगे वहाँ सहानुभूति के नाम पर सरल स्वभाव लोगों को तथा कमज़ोर ईमान वालों को भी फ़ितना करने के लिए अपना उपकरण बनाते हैं। अतः प्रत्येक अहमदी को इस विषय में होशियार रहना चाहिए। अल्लाह तआला जमाअत को प्रत्येक भीतरी और बाहरी फ़ितने से बचाए सदैव, और सदैव नेकी और तक़्वा की मजलिस में बैठने और इसका अंग बनने का सामर्थ्य प्रदान करे, न कि गुनाह बग़ावत और रसूल की अवज्ञा और तक़्वा से दूर करने वाली मजलिसें हों।

मजलिसों के विभिन्न प्रकारों तथा हालतों के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भी कुछ उपदेश हैं और आपके सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के भी कुछ उपदेश हैं, वे भी इस अवसर पर पेश करता हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- जब देखो कि किसी मजलिस में अल्लाह और उसके रसूल पर हंसी ठट्टा हो रहा है तो वहां से चले जाओ ताकि तुम्हारी उनमें गणना न हो अथवा फिर पूरा पूरा खुलकर जवाब दो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- मजलिस में बैठे भी रहना और चापलूसी दिखाते हुए या भय के कारण उन लोगों की हाँ में हाँ मिलाना, फिर दबी ज़बान में कह भी देना कि नहीं यह तुम ग़लत कह रहे हो, यह बात इस प्रकार नहीं उस प्रकार होनी चाहिए, लेकिन खुलकर बात को व्यक्त न करना, यह निफ़ाक़ (पाखंड,ढोंग) है, यह मोमिन का तरीक़ा नहीं है। मोमिन की प्रतिक्रिया यह होनी चाहिए कि अल्लाह और रसूल अथवा उनके द्वारा स्थापित जमाअत के निज़ाम के विरुद्ध बात सुनो तो तुरन्त रद्द कर दो और बताओ उन बातें करने

वालों को कि यदि तुम्हारे विचार में ये सारी बातें उचित हैं तो ख़लीफ़-ए-वक़्त और निज़ाम को बताओ लेकिन इस प्रकार बातें करना जायज़ नहीं। ऐसी मजलिसों में यदि इंसान बैठा रहे और दबी ज़बान में रद्द करे तथा खुलकर न बोले तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह निफ़ाक़ बन जाता है और इससे एक मोमिन को बचना चाहिए और दीन के मामले में तथा निज़ाम के मामले में कभी भी अस्वाभिमानी नहीं दिखानी चाहिए तथा स्वाभिमान की अभिव्यक्ति दो प्रकार से है कि या तो खुलकर जवाब दो या उस मजलिस से उठकर चले जाओ। यही तरीक़ा अल्लाह तआला ने भी फ़रमाया और इसकी व्याख्या आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाई है।

अतः एक रिवायत में आता है कि एक सहाबी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह मुझे कोई उपदेश दें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह का तक़्वा धारण करो और जब तुम किसी क़ौम की मजलिस में जाओ तथा उन्हें अपने स्वभाव के अनुसार बातें करते हुए पाओ तो वहाँ ठहरो अर्थात नेकी की बातें यदि कर रहे हों और ग़लत प्रकार की बातें नहीं कर रहे, फ़ितना और फ़साद की बातें नहीं कर रहे तो वहाँ ठहरो और यदि वे ऐसी बातों में व्यस्त हों जिन्हें तुम पसन्द नहीं करते तो उस मजलिस को छोड़ दिया करो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास बयान करते हैं कि एक व्यक्ति ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि हम किन लोगों की मजलिसों में बैठें? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम उन लोगों की मजलिसों में बैठो जिनको देखकर तुम्हें ख़ुदा याद आए तथा जिनकी बात चीत के द्वारा तुम्हारा दीन का ज्ञान बढ़े और जिनके कर्म तुम्हें आख़िरत की याद दिलाएँ। अतः यह है वह मार्ग दर्शक नियम जो एक मोमिन को अपनी मजलिस का चयन करते हुए सामने रखना चाहिए। यदि केवल दुनियादारों की मजलिसें हैं तो ये मजलिसें एक मोमिन को पसन्द नहीं होनी चाहिएँ, ऐसी मजलिस से तुरन्त उठकर आ जाना चाहिए। यदि इसकी ओर हमारा ध्यान हो तो हमारे बड़े भी और हमारे युवा भी अनेक बुराईयों से बच जाएँगे।

जमाअत में भी कई बार ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं कि बुरी मजलिसों तथा बुरे प्रभाव के कारण हमारे युवा नौजवानी में क़दम रखते ही कुछ ऐसी हरकतें कर जाते हैं जो दूसरों को हानि पहुंचाने वाली होती हैं। पड़ौसियों को नुक़सान पहुंचा दिया अथवा रास्ते में किसी को हानि पहुंचा दी अथवा किसी जगह गए तो अकारण ही किसी को नुक़सान पहुंचा दिया और फिर यदि यह पता चल जाए कि यह जमाअत का आदमी है तो फिर जमाअत की भी बदनामी का कारण बन जाते हैं ऐसे लोग। अतः माँ बाप को भी अपने बच्चों की मजलिसों तथा सम्पर्कों पर नज़र रखनी चाहिए ताकि हमारे युवा, नौजवानी में क़दम रखने वाले बच्चे भी बुरे सम्पर्कों और मजलिसों से भी सुरक्षित रहें तथा स्वयं भी घरों में ऐसी पाक मजलिसें लगानी चाहिएँ जो सदैव प्रशिक्षण की दृष्टि से अच्छी हों।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि जब कोई क़ौम मस्जिद में अल्लाह की किताब की तिलावत तथा आपस में पठन पाठन के लिए बैठी हो तो अल्लाह तआला उनपर सकीनत उतारता है तथा अल्लाह तआला की रहमत उन्हें ढक लेती है तथा फ़रिश्ते उन्हें अपनी परिधि में ले लेते हैं। अल्लाह तआला की बड़ी कृपा है कि जमाअत को अवसर मिलते रहते हैं। इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि जो लोग किसी मजलिस में बैठते हैं तथा वहाँ अल्लाह का ज़िक्र नहीं करते वे अपनी मजलिस को क़्यामत के दिन हसरत (पश्चाताप) से देखेंगे। अतः इज्तिमा पर आने वालों को याद रखना चाहिए कि अपने आने के उद्देश्य को पूरा करें तथा अपना समय हंसी ठट्टे और व्यर्थ की बातों में लगाने के बजाए अधिकांश समय अल्लाह के गुणगान तथा नेकी की बातें करने और सुनने में व्यतीत करें ताकि हमारी मजलिसें क़्यामत के दिन कभी हसरत से देखी जाने वाली मजलिसें न हों। एक रिवायत में आता है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम मोमिन के अतिरिक्त किसी और के साथ न बैठो तथा मुत्तक़ी के अतिरिक्त कोई अन्य तुम्हारा खाना न खाए। अर्थात- तुम्हारी गहरी दोस्ती, तुम्हारा अधिकतर उठना बैठना, तुम्हारा अधिकांश समय व्यतीत करना, तुम्हारी मजलिसें अधिकतर ऐसे लोगों के संग हों जो ईमान में मज़बूत हों तथा तक़्वा पर चलने वाले हों ताकि तुम भी नेकी और तक़्वा में आगे बढ़ो।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि आत्मा की पवित्रता का एक मार्ग ख़दा तआला ने यह बताया है कि كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ अर्थात जो लोग कथनी करनी और स्थिति के रंग में सत्य पर स्थापित हैं उनके साथ रहो। सम्पर्क का बड़ा भारी प्रभाव होता है जो भीतर ही भीतर होता चला जाता है। फ़रमाया कि जो व्यक्ति मधुशाला में जाता है चाहे वह कितना भी बचे तथा कहे कि मैं नहीं पीता लेकिन एक दिन ऐसा आएगा कि वह अवश्य पिएगा। अतः सदैव बुरे सम्पर्कों से बचने की आवश्यकता है। सामान्य दुनियावी कारोबार में सम्पर्क तो होता है अन्य लोगों के साथ, लेकिन इन सम्पर्कों में सीमाएँ होनी चाहिएँ। यह नहीं कि उनकी व्यर्थ की मजलिसों में भी इंसान जाना शुरु कर दे। इस चीज़ को रोकने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारा बे दीन लोगों के साथ अधिक उठना बैठना, खाना पीना तुम्हें दीन और तक़्वा से दूर कर देगा। हाँ, तबलीग़ के लिए, नेक बातों को पहुंचाने के लिए सम्पर्क अवश्य स्थापित करने चाहिएँ, इसके बिना तबलीग़ नहीं हो सकती लेकिन इसके लिए उन्हें अपनी मजलिसों में लाना चाहिए

क्यूँकि ये नेकी की मजलिसें फिर अपना प्रभाव छोड़ती हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- जब इंसान सत्यवान एवं सत्यवादी के पास बैठता है तो सत्य उसमें काम करता है परन्तु जो सत्यवान की मजलिस को छोड़कर बुरे तथा झूठे लोगों का सम्पर्क ग्रहण करता है तो उनपर बुराई प्रभाव करती है। इसी लिए फ़रमाया हदीस और क़ुर्आन शरीफ़ में बुरे सम्पर्क से बचने की ताकीद और सीमा पाई जाती है और लिखा है कि जहाँ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपमान होता हो उस मजलिस से तुरन्त उठ जाओ अन्यथा जो अनादर सुनकर नहीं उठता उसकी गणना भी उन्हीं अपमान करने वाले लोगों में होगी।

फिर आप फ़रमाते हैं कि सत्यवादियों तथा सत्यवानों के पास रहने वाला भी उनमें शामिल रहता है इस लिए कितनी आवश्यकता है इस बात की कि इंसान كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ के पवित्र आदेशानुसार कर्म करे। फ़रमाया- हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों को दुनिया में भेजता है, वे पाक लोगों की मजलिसों में आते हैं और जब वापस जाते हैं तो अल्लाह तआला उनसे पूछता है कि तुमने क्या देखा? वे कहते हैं कि हमने एक मजलिस देखी जिसमें लोग तेरा गुणगान कर रहे थे परन्तु एक व्यक्ति उन ज़िक्र करने वालों में से नहीं था लेकिन वहां बैठा हुआ था तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि नहीं, वह भी उनमें से ही है क्यूँकि اِنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَشْقٰى جَلِيْسُهُمْ इससे स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि सत्यवादियों के सम्पर्क से कितने लाभ हैं। बड़ा दुर्भाग्य शाली है वह व्यक्ति जो ऐसे सम्पर्क से दूर रहे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- यह बात अति आवश्यक है कि तुम लोग दुआ के माध्यम से अल्लाह तआला से निकटता मांगो कि इसके बिना दृढ़ विश्वास कदापि प्राप्त नहीं हो सकता। वह उस समय प्राप्त होगा जबकि यह ज्ञान हो कि अल्लाह तआला से सम्पर्क काटने में मौत है। फ़रमाया कि पाप से बचने के लिए जहाँ दुआ करो वहाँ युक्ति को भी हाथ से न जाने दो तथा समस्त मजलिसें और गोष्ठियाँ जिनमें शामिल होने से पाप की प्रेरणा मिलती है उनको छोड़ दो और साथ ही दुआ भी करते रहो और ख़ूब जान लो कि इन आफ़तों से जो कज़ा व क़द्र (विधि के विधान) की ओर से इंसान के साथ पैदा होती हैं, जब तक ख़ुदा तआला का सहयोग साथ न हो कदापि रिहाई नहीं होती। फ़रमाया- नमाज़ जो कि पाँच समय अदा की जाती है उसमें भी यही इशारा है कि यदि वह मानसिक वृत्ति के विचारों से उन्हें सुरक्षित नहीं रखेगा तब वह सच्ची नमाज़ कादपि न होएगी। नमाज़ का अर्थ टक्करें मार लेने तथा प्रथा के रूप में अदा करने से कदापि नहीं, नमाज़ वह चीज़ है जिसे दिल में भी अनुभव करे कि आत्मा पिघलकर भयानक हालत में अल्लाह की चौखट पर गिर पड़े। फ़रमाया- जहाँ तक शक्ति है वहाँ तक व्याकुलता पैदा करने का प्रयास करे तथा करुणा पूर्ण रीति से माँगे कि शोख़ी और गुनाह जो आत्मा के भीतर हैं वे दूर हों, इसी प्रकार की नमाज़ बरकत वाली होती है। एक अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कुछ कलमे ऐसे हैं जिसने भी इनको अपनी मजलिस से उठते हुए तीन बार पढ़ा तो अल्लाह तआला उनके माध्यम से उसके वे पाप जो उसने वहाँ किए होंगे उनको ढक देगा और जिसने ये कलमे किसी अच्छी मजलिस में तथा अल्लाह के गुणगान की मजलिस में पढ़े तो उनके साथ उस पर मोहर कर दी जाएगी और वे कलमे ये हैं कि سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَلَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ कि ऐ अल्लाह, तू अपनी प्रशंसा के साथ पाक है, तेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, मैं तुझसे क्षमा चाहता हूँ और तेरी ओर ही पलटता हूँ। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यह दुआ, जो नापसन्दीदा बातें हैं उनके बुरे प्रभाव से सुरक्षित रखती है तथा इंसान को नेक मजलिसों के सम्पर्क से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने का कारण बनाती है।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला हमें सामर्थ्य प्रदान करे कि हम सदैव बुरी मजलिसों से बचने वाले हों और यदि कभी अनजाने में शामिल हो जाएँ तो उनके बुरे प्रभाव से सुरक्षित रहें। सदैव पवित्र मजलिसों की खोज में रहें तथा उनमें बैठने वाले हों तथा इन पवित्र मजलिसों की पवित्रता और अल्लाह तआला की कृपा से लाभान्वित होने वाले हों। अल्लाह तआला हमें सदैव शैतान के हमले से बचाए, हम से रहम और क्षमा शीलता का व्यवहार फ़रमाए, हमें सदा ख़िलाफ़त और जमाअत के निज़ाम के साथ जोड़ रखे तथा प्रत्येक फ़ितना फैलाने वाले के फ़ितने से सुरक्षित रखे। हुज़ूर पुर नूर ने एक अफ़्रीक़न अहमदी मुकर्रम बिलाल अब्दुस्सलाम साहब ऑफ़ फ़लिडैलफ़िया यू एस ए की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ने की घोषणा फ़रमाई तथा आपके सद्गुण बयान फ़रमाए।

TOLL FREE NO: 180030102131